रिकॉर्ड :- तू प्यार का सागर है.... ओम शान्ती प्रात: क्लास 27-1-61

अव यह गीत भी गलत है। प्यार का सागर- वदली होना चाहिये ज्ञान का सागर। प्यार का कोई लोटा नही होता। लोटा गंगा जल आदी पानी का होता है। तो यह है भक्ति मार्ग की महिमा। वाप नें सिध किया कि वो रांग है यह राईट है। वाप पहले-2 तो ज्ञान का सागर है। थोड़ा भी ज्ञान होता है तो वहुत ऊंच पद प्राप्त कराते है। वच्चे जानते है कि वरोवर हम इस समय चैतन दिल वाला मन्दिर के भांती है। वो है जड़ दिलवाला मन्दिर। और यह है चैतन दिलवाला मन्दिर। इसपर लगाया जाये चैतन दिलवाला मन्दिर। वो जड़। यह भी वण्डर है नां, जहां ही जड़ यादगार खड़ा है वहां ही तुम चैतन आकर ठहरे हो। परन्तु आसुरी समप्रदाय कुछ समझते थोड़ेई है। तुम चैतन दिलवाला लिख दो तो पत्थर भी मारने लग पड़ेंगे। फिर पिछाड़ी में यह लोग वहुत ही पछतानेवाले है। खुद ही फील करेंगे कि इनके साथ यह क्या-2 करते थे। जैसे गवर्मेन्ट नें कहा कि तुम यूनिवरसिटी अक्षर नही लिख सक्ते हो। आगे चलकर समझेंगे वरोवर यह तो गाड फादरली यूनिवरसिटी है। भगवान पढ़ाते है इससे और वड़ी कोई यूनिवरसिटी हो नां सके। इस समय वो नही समझतें। जव समझ जाते है तो आकर वच्चा वन जाते है। ऐसे-2 वहुत वन जावेंगे। इसलिये ट्रायल करनें में कोई हर्जा नही है। फिर पिछाड़ी को वहुत पछतावेंगे। समझेंगे यह चैतन दिलवाला मन्दिर तो वरोवर है। यह दिलवाला मन्दिर एक्यूरेट यादगार है। ऊपर छत में सुर्यवंशी चन्द्रवंशी है। नीचे में आदी देव, और आदी देवी और वच्चे भी वैठे है। इनका नाम ही है व्रह्मा। और सरसवती है व्रह्मा की वैटी। वाकी है उनके वच्चे। प्रजापिता व्रहमा तो जरूर गोप गोपियां भी होंगे नां। वो तो है जड़ चित्र। जो पास्ट हो कर जाते है उनके जड़ चित्र वन जाते है। कोई मरते है तो झट उनके चित्र वना देते है। उनके पोजीशन, वायोग्राफी आद का तो पता है नां। उनका आक्यूपेशन ही नां लिखे तो चित्र कोई काम का नही रहा। पता रहता है फलाने नें यह-2 कर्तव्य किये है। अव यह जो देवताओं केमन्दिर है उनकेउनकी वायोग्राफी आक्यूपेशन को कोई को पता नही है। ऊंच ते ऊंच शिव वावा को भी कोई नही जानते है। यह जो भी जड़ चित्र देवताओं के है उनको कोई भी नही जानते। इस समय तुम वच्चे सभी की व्रायोग्राफी को जानते हो। मुख्य कौन-2 होकर गये है जिनको पूजते है। ऊंच ते ऊंच तो है भगवान। शिव रात्री भी मनाते है। तो जरूर उनका अवतरण हुआ है। परन्तु कव हुआ उसनें क्या आकर किया यह कोई को पता नही है। शिव के साथ है ही व्रहमा। आदी देवी और आदी देव इनका मन्दिर भी है। परन्तु यह कोई को पता नही कि आदी देवी आदी देव कौन है। क्यों कि वृधी तो होती है नां। प्रजापिता व्रहमा से कितनी वृधी होती है। व्रहमा के लिये ही कहते है 100 भुजायें, 1000 भुजायें... विष्णु वा शंकर के लिये इतनी भुजायें नही कहेंगे। व्रहमाके लिये ही क्यों कहते है? यह प्रजापिता व्रहमा की सारी वंशावली है नां। भुजाओं की वात नही है। वो भल कहते है कि 1000 भुजाओं वाले व्रहमा। परन्तु अर्थ थोड़ेई समझते है। सुननें वाले भी हां-2 करते रहते है। अव तुम प्रैक्टीकली देखो व्रहमा की कितनी भुजायें है। प्रजापिता व्रहमा की वंशावली तो वहुत है नां। वेहद की। यह है भुजायें। इस समय 500 करोड़ मनुष्य है सांकार में। तो 10, सौकरोड़ भुजायें हो गई नां। प्रजापिता व्रहमा को तो सव मानते है परन्तु आक्यूपेशन का किसीको पता नही है। आत्मा की तो भुजायें नहीहै नां। भुजायें शरीर की होती है। 500 करोड़ व्रदर्स है तो उनकी भुजायें कितनी हुई। हिसाव तो वुधी में आता है नां। जव कोई पूरी रीती ज्ञान को समझ जावें। तो वादही की यह वातें है। पहले-2 तो मुख्य वात ही एक है वाप कहते है मुझे याद करो और वर्से को याद करो। फिर ज्ञान का सागर भी गाया हुआ है। कितनी अथाह पुआइन्टस सुनाते ही रहते है। सारी पुआइन्टस तो कोई को याद रह नां सके। तंत वुधी में रखा जाता है। पिछाड़ी में तो तंत हो जाता है मनमनाभव। ज्ञान का सागर कृष्ण को तो नही कह सकेंगेनां। वो है रचना। रचता तो एक ही है। वो ही सवका वाप हो गया। सवको वर्सा देंगे। सवको घर ले जावेंगे। वाप का तथा आत्माओं का घर है ही साइलेन्स होम। विष्णु पुरी को वाप का घर

तथा बच्चों का घर ही है साईलेन्स होम। विष्णु पुरी को बाप का घर नहीं कहेंगे। घर है मूल वतन। यह गहरी-2 बातें हैं जिनको सेन्सीबुल बच्चे ही समझ सकेंगे। धारण कर सकेंगे। इतना सारा ज्ञान कोई की बुद्धी में याद रह ना सके। ना इतने कागज रख सकते हैं। यह जो मुरलियां निकलती हैं वो सबकी सब इकठी करते जावें तो यह इस सारे हाल से भी जास्ती हो जावें। ढेर कागज छपते हैं। उस पढ़ाई में भी कितने ढेर किताब होते हैं। परीक्षा पास करली फिर बैरिस्टरी का तंत बुधी में आ जाता है। शरीर निर्वाह अर्थ बैरिस्टर बन गये। एक जन्म लिये अल्प काल का सुख मिलजाता है। वो है विनाशी कमाई। तुमको बाप अविनाशी कमाई कराते हैं भविष्य के लिये। बाकी सब जो भी गुरू गोसाई हैं वो सब विनाशी कमाई कराते हैं। विनाश के नजदीक आते जाते हैं कमाई कम होती जाती है। तुम कहेंगे कमाई तो बढ़ती जाती है। नही यह तो सब खत्म हो जानी है। आगे राजाओं आद की कमाई चलती थी। अब तो वो भी ना है। थोड़ा बहुत जिनके पास भी जो है वो भी छीन लेंगें। तुम्हारी कमाई कितना समय चलती है। तुम जानते हो यह क्या बनाया ड्रामा है जिसको दुनियाँ में कोई भी नहीं जानते हैं। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं जिनको धारणा होती है। कईतो बिलकुल ही समझाये नहीं सकते हैं। कोई कहते हैं हम मित्र सम्बन्धियों आद को समझाते हैं। वो भी तो पहचान हो गया नाँ। औरों को प्रदर्शनी आद में क्यों नहीं समझाते हैं। पूरी धारना नहीहोती है। अपने को मियाँ मिट्ठू तो नहीं समझना है नाँ। सर्विस का शौक है तो जो अच्छी रीत समझाते हैं उनको लाकर सुनना चाहिये। प्रैक्टिस करनी चाहिये। बाप आये ही हैं ऊंच पद प्राप्त कराने तो पुरुषार्थ करना चाहिये नाँ। परन्तु तकदीर में ही नाँ है तो श्रीमत भी नहीं मानते हैं। फिर पद भी भ्रष्ट हो जाता है। राजधानी स्थापन हो रही हैं उसमें तो हर प्रकार के ही चाहिये नाँ। ड्रामा प्लान अनुसार राजाई स्थापन हो रही है। सैन्टर्स पर ब्राह्मणी भी समझ सकती है कोई अच्छी प्रजा बननें वाला है कोई कम। बाप कहते हैं मैं तुमको राजयोग सिखाने आया हूं। दिलवाला मन्दिर में राजाओं के चित्र हैं नाँ। जो पूज्य बनते हैं वो ही फिर पुजारी बनते हैं। राजा रानी का मर्तबा ऊंच है नाँ। फिर वाम मार्ग में आते हैं तबभी राजायें। अथवा बड़े-2 शाहुकार तो हैं नाँ। जगन्नाथ के मन्दिर में सबको ताज दिखाया है। प्रजा को तो ताज नहीं होगा। ताज वाले राजायें भी फिर विकार में दिखाते हैं। सुख सम्पति तो उनको बहुत होगी नाँ। सम्पति से सुख जास्ती तो होता है नाँ। हीरे के महल, और चांदी के महलों में फर्क तो होता है नाँ। तो बाप तो बच्चों को कहेंगे अच्छा पुरुषार्थ कर ऊंच पद पाओ। राजाओं को सुख जास्ती होता है। भल वहां सभी सुखी होते हैं जैसे यहाँ सबको दुखः है। बिमारी आद तो सबको ही होती है नाँ। वहाँ भी सुख ही सुख है फिर भी मर्तबा तो नम्बरवार होता ही है नाँ। बाप सदैव कहते हैं पुरुषार्थ करते रहो। सुस्त मत बनो। पुरुषार्थ ही से समझा जाता है ड्रामा प्लान अनुसार इनकी सदगती इतनी, इस ही प्रकार होनी है। अपनी सदगती के लिये फिर श्रीमत पर चलना पड़े। अच्छी-2 जो ब्राह्मणीयां हैं उनकी मत पर चलना पड़े। टीचर की मत पर स्टूडेन्ट ना चलें तो कोई काम का नहीं। ना चलना ही माना नास्तिक पणा। यहाँ भी ब्राह्मणी मुकरर की हुई है। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार तो सब है। तो उनके ही सिखाये पर चलना चाहिये। अगर कोई कहते हैं हम यह नहीं करेंगे तो बाकी क्या सीखेंगे। नास्तिक बनते हो तो जाओ अपने घर। मत पर अच्छा होकर चलना चाहिये जो कोई भी समझे कि यह तो बहुत अच्छा समझाते हैं। कितना अच्छा बोलते हैं, इसमें भी बहुत बच्चे फेल होते हैं। अच्छे-2 बच्चे जिनको बाबा सैकिंड थर्ड में गिनते है कितने देह अभिमान में मर गये। और कितने ही मरने वाले हैं। जैसे कि मरे भी पड़े हैं। बाबा जानते हैं कि देह अभिमान बहुतों में है। आत्मा जीते जी मर कर एक की बने तो फिर औरों को क्यों याद करना चाहिये। देही अभिमानी बननें की बड़ी मंजिल है। एक के सिवाय और कोई को याद ना करे। सब कुछ भुलना है। हम नंगे आये थे नंगे जाना है। और कुछ भी याद ना रखना चाहिये। यह बड़ी मंजिल है। वहाँ अभ्यास तो है ही नंगी देही बन

फिर यहाँ आकर देह धारण करती है। अब फिर यहाँ इस देह में होते हुये अपने को नंगा समझना है। यह मेहनत बड़ी भारी है। अपने को आत्मा समझ, कर्मातीत अवस्था में रहना है। एक शरीर छोड़ दूसरा लेना है। सर्प को भी अक्ल है। पुरानी खल छोड़ देते हैं। तो तुमको भी देह अभिमान से कितना निकलना है। मूल वतन में तो है ही देहीअभिमानी। यहाँ देह में होते अपने को आत्मा समझना है। अभी हमको नंगा वापस जाना है। इसमें ही मेहनत है। देहअभिमान टूट जाना है। बहुत हैं जो देहअभिमान में रहते पक्के हो गये हैं। कितनी भारी परीक्षा है। भगवान को आकर पढ़ाना पड़ता है। ऐसे कोई कह नां सके कि देह के सब [illegible] नाते छोड़ मैं बनो।अपने को निराकार समझो। कोई भी चीज का भान नां रहे। यहाँ माया कितना फंसाती है। एक दो की देह में बहुत फंसते हैं। इसलिये बाबा कब इनका(साकार का) फोटो भी नहीं देते हैं। क्यों कि तुमको इनको तो याद करना ही नहीं है। कोई-2 जास्ती शिदत करते हैं तो बाबा समझ जाते हैं यह भक्त है। ज्ञानी नहीं। बाबा कहते हैं यह अच्छा नहीं है। बाप को याद करना है। इसमें बहुत मेहनत की बात है। माया अच्छे-2 बच्चों को भी लटकाती रहती है। एकदम नाम रूप में लटका देती है। कोई स्त्री स्त्री में, कोई स्त्री का पुरुष के शरीर में। यह लागत बहुत खराब है। इससे जैसे कि मेहनत कम पड़े है। यह शरीर को याद करना यह तो भूतों की याद हो गई।शरीर से दिल लगा गोया भूतों से योग लगा। हम कहते हैं शिव बाबा को याद करो यह फिर पांच तत्वों को याद करते हैं तो भूत को याद करना हो गया नां। देह से बिलकुल लागत नां रहनी चाहिये। ब्राह्मणी से भी सीखना है नां के लटकना है।देही अभिमानी बनने में ही मेहनत है। भल बाबा के पास चिट बहुत भेज देते हैं।परन्तु बाबा इतबार नहीं करते। कोई तो कहते हैं हम तो शिव बाबा के सिवाय और कोई को याद ही नहीं करते हैं। बाबा समझ जाते हैं ज़रा भी याद नहीं करते हैं। याद की तो बड़ी मेहनत है।कहां नां कहां फंस पड़ते हैं। देहधारी को याद करना यह पांच भूतों को याद करना है। इनको भूत पूजा कहा जाता है। पूजा नहीं भूत को याद करते हैं। यहां तो शिव बाबा को याद करना है। पूजा नहीं। भक्ति का नाम-निशान ही गुम कर देते हो। वो तो दुर्गति है नां। जड़ चीजों को क्या याद करना। वो भी तो मिट्टी के बने हुये हैं। बाप कहते हैं वो सब ड्रामा में नूंध है। अब फिर तुमको पुजारी से पूज्य बनाता हूँ। किसीके भी शरीर को याद नहीं करना है। आत्मा पावन बन जावेगी तो फिर शरीर भी पावन मिलेगा। अभी शरीर तो पावन नहीं है नां। पहले आत्मा सतोप्रधान से जब सतो रजो तमो में आती है तो शरीर भी उसी अनुसार मिलते हैं। अभी तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान, पावन बन रहे हो।अभी तुम्हारा शरीर, चेंज होता जावेगा। यह बहुत समझने की बातें हैं। यह पुआइन्टस उनकी बुद्धि में अच्छी रीत बैठेगी जो समझ और समझाते होंगे। सतोप्रधान आत्मा को बनना है। इस शरीर में ही आत्मा को इतना बनना है। बाप को याद करने की ही बड़ी मेहनत है। कईयों को तो ज़रा भी याद नहीं रहता है। बुद्धि योग कहांकहां भटकता रहता है। तो फिर नापास हो जाते हैं। जितना बहुतों को आपने समान बनावेंगे उतना ही खुद ऊंच पद पावेंगे। देह को याद करने वाले कब भी ऊंच पद पा नहीं सकते हैं। यहां तो पास विथ आनर होना है। इसमें समझाने वाले भी हैं और मेहनत करने वाले भी बैठे हैं।मेहनत बिना यह पद कैसे पावेंगे। बाप कहते हैं पुरुषार्थ करने वाले को फालो करो। यह भी पुरुषार्थी हैं। यह बड़ा विचित्र ज्ञान है। दुनियां में कोई को पता नहीं है। किसीको भी बुद्धि में नहीं बैठेगा कि आत्मा की चेंज क्या होती है। यह सारी गुप्त मेहनत है। बाबा भी गुप्त है। तुम कैसे राजाई प्राप्त करते हो।लड़ाई झगड़ा भी कुछ नहीं। तुम जानते हो हमारी लड़ाई किसके साथ है। लड़ाई भी अक्सर कहते हैं, है तो ज्ञान और योग की बात। हम कोई से लड़ते नहीं हैं। यह तो आत्मा को प्योअर बनाने लिये मेहनत करनी ही है। आत्मा जैसे-2 पतित बनती जाती है तो शरीर भी पतित लेती जाती है। फिर पावन बन चले जाना है। बाबा समझ

सकते है कौन क्या, कितना पुरुषार्थ करते है। किसको कितना पुरुषार्थ कराना है। यह है शिव बाबा का भण्डारा। शिव बाबा के भण्डारेमें सर्विस नां करने से सत्यानाश हो जाती है। फिर पाई पैसे का पद पा लेंगें। बाप के पास सर्विस के लिये आये और सर्विस ही नां कि की तो क्या पद पायेंगें? यह राजधानी स्थापन हो रही है। इसमें नौकर चाकर आद भी तो बनेंगे नां। अब तुम रावण पर जीत पाते हो। बाकी कोई लड़ाई है नही। यह समझाया जाता है। कितनी गुप्त बात है, योगबल से विश्व की बादशाही। क्रिश्चन लोग ने कितनी राजाई हाथ की। सबके ऊपर इनका राज्य था। परन्तु सारे विश्व पर राज्य नही कर सकते। वहां तो तुम सारे विश्व पर राज्य करते थे। यह सारी नालेज तुम्हारे पास है। तुम जानते हो हम यहां के रहने वाले ही नही। हम तो अपने शान्ती धाम के रहने वाले है। तुम बच्चों को बेहद का घर ही याद है। यहां हम पार्ट बजाने आये है फिर जाते है अपने घर। आत्मा कैसे आती कैसे जाती है यह कोई समझते थोड़ेई है। ड्रामा प्लान अनुसार आत्माओं को आ ना ही है। ऐसे थोड़ेई सृष्टी बढ़नी बंद हो जावेगी। और ही जल्दी-2 बढ़ती जाती है। अच्छा मीठे-2 बच्चों को बाप दादा का याद प्यार ओम —

24-1-67:-प्रातः क्लास का बाकी हिस्साः-हम सब ब्राह्मण ब्राह्मणियां है। ब्रह्मा मुखवंशावली भाई बहन
*******, **********************
विकारी कैसे हो सकते है। तुम ब्राह्मणों की वो भी ब्राह्मण महिमा गाते है। ब्राह्मण, देवतायें नमः कोई आपसमें भी किसी बात में बोलने लग पड़ें तो कहो इसमें बिगड़ने की तो कोई बात ही नही। बाबा ने कहा है मुझे याद करो। बस फिर हमने 84 जन्म कैसे लिये उनकी डिटेल इन चित्रों में है। वो भी दिव्य दृष्टी दवारा बने है। कृष्ण को तो सब जानते ही है। फिर कृष्ण हो. वो नही हो. बस एक बार उनका चित्र देखा फिर याद ठहर जाती है। अभी ऊच तें ऊच बाप कहते है मुझे याद करो तो तुम ऊंच तें ऊच बनेंगे। ऊच तें ऊच है ही एक बाप। वो कहते है मैं तुमको ऊच तें ऊंच राजयोग सिखवाता हूं। तुम सारे विश्व के मालिक बनते हो। तुमसे कोई छीन ना सके। भारत विश्व का मालिक था नां। भारत की कितनी महिमा है। अभी तुम जानते हो हम श्रीमत पर यह राज्य स्थापन कर रहे है। ओम

24-1-67:- प्रातः क्लासः- पवित्र प्रवृती मार्ग बाप ही बनाते है। इसलिये ही विष्णु को भी 4 भुजायें दिखवाते
****
है। शंकर के साथ पार्वती, ब्रह्मा के साथ सरस्वती दिखवाते है। अब ब्रह्मा की कोई स्त्री तो है नही। यह तो बाप का बन गये आप मरे तो मर गई दुनियां। कितनी वण्डरफुल बातें है। मात-पिता तो है नां। यह प्रजापिता भी है और फिर इन दवारा बाप रचते है तो मां भी ठहरी। सरस्वती तो ब्रह्मा की बेटी गाई जाती है। यह सब बाते बाप बैठ समझाते है। जैसे बाबा यह सवेरे उठ कर विचार सागर मथन करते है। बच्चों को भी फालो करना है। कितना हार जीत का वण्डरफुल खेल है। दुख पर खुशी होती है। हमको कोई से घृणा-नही आती है। यह तो हम समझाते है भक्ति मार्ग दुर्गती मार्ग कैसे है। बाकी यह तो खेल है। हम सारे ड्रामा के आद मध्य अन्त को जान गये है। तुम बच्चों को मेहनत भी करनी है। गृहस्थ व्यवहार में रहना है। कोई कुमारी अच्छे कुल की है कहती है हमको बचाओं। मां बाप भी कहते है अच्छा ज्ञानी लड़का ही हो। इन्द्र की हिम्मत है? पान का बीड़ा उठाना है। हम युगल इकठे रहते पवित्र बन पवित्र दुनिया का मालिक बनेंगे। गन्धर्व विवाह भी गाया हुआ है। यह है सब अभी की बात। फिर कोई-2 तो फैल भी हो पड़ते है। बाबा के हाथ में कोई शास्त्र आद नही है। यह तो शास्त्रों का सार सुनाते है। ओम

25-1-67:- प्रातः क्लास का बाकी हिस्सा-तुम सब आशिक हो एक माशूक के। तुम सब आशिक इस माशूक को ही याद करते हो। वो आकर सबको सुख देते है। आधा कल्प तक उनको याद किया है वो अब आकर मिला है तो कितनी खुशी होनी चाहिये। बाबा ने यह भी समझाया कि तुम लिख दो कि साईलेन्स से सांईस पर कैसे विजय पाते है सो भी आकर समझो। बाप कहते है तुम मुझे याद करो तो तुम योग बल से पावन बन जावेंगे। इस सांईस से ही विनाश होना है। सांईस इसमें और ही मदद करते है। तो साईलेन्स से विजय, सांईस से है विनाश। योगबल, शान्ती बल से हम विजय प्राप्त करते है। ज्ञान का है खजाना ओम